1998 से निरन्तर प्रकाशित

कला और कलाकारों को समर्पित राष्ट्रीय पत्रिका का 29 वाँ वर्ष 138 वाँ अंक...

ISSN 2581-446X
वर्ष-9, अंक-3, दिसम्बर-जनवरी 2026 ₹100/-

कला समय

कला,संस्कृति,साहित्य एवं समसामयिक द्वैमासिक पत्रिका

RNI. No. MPHIN /2017/73838

हिन्दुस्तानी शास्त्रीय गायक, गायकी और घराने

(विशेषांक)

अतिथि संपादक : पं. सज्जनलाल ब्रह्मभट्ट 'रसरंग'

संपादक : भँवरलाल श्रीवास

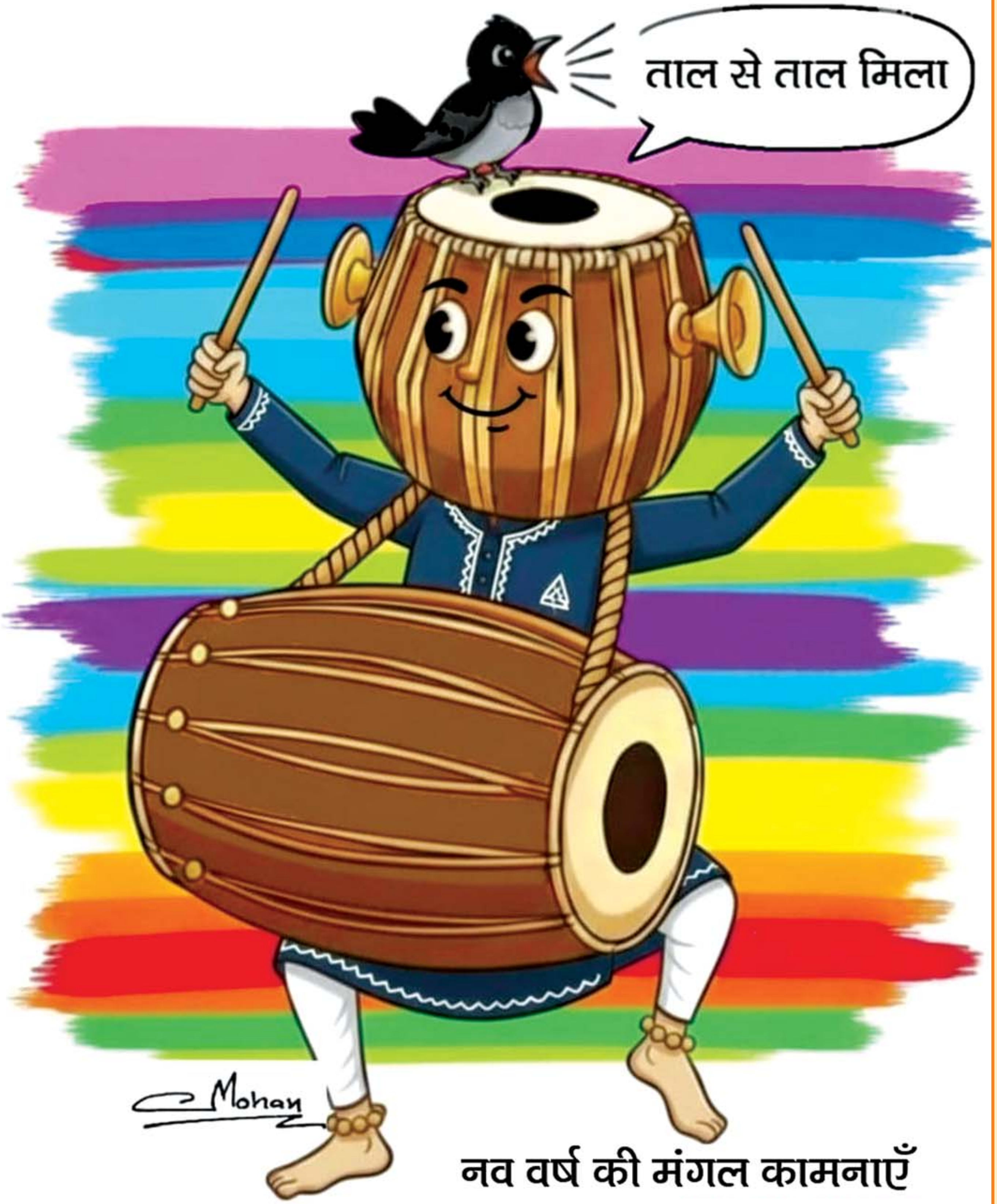

नव वर्ष की मंगल कामनाएँ

'कला समय'

कलाकार: चन्द्र मोहन

RNI NO. MPHIN/2017/73838

1998 से निरंतर प्रकाशित

देश की सर्वश्रेष्ठ एक मात्र सांस्कृतिक पत्रिका

कला समय पत्रिका वेबसाइट पर उपलब्ध

www.kalasamaymagazine.com

ISSN 2581-446X

(पंजीयन पूर्व प्रकाशित अंक, वर्ष सम्मिलित)

(वर्ष : 20+09=29) पूर्णांक-138,

वर्ष-9, अंक-3, दिसम्बर-जनवरी 2026, मूल्य : ₹100/-

माधवराव सप्रे समाचार पत्र संग्रहालय एवं शोध संस्थान, भोपाल म.प्र. द्वारा 'रामेश्वर गुरु सम्मान' से पुरस्कृत
श्री भारतेन्दु समिति कोटा (राज.) द्वारा 'साहित्यश्री' सम्मान एवं
साहित्य मण्डल श्री नाथद्वारा (राज.) द्वारा 'सम्पादक रत्न' सम्मान से सम्मानित
म.प्र. हिन्दी साहित्य सम्मेलन भोपाल (म.प्र.) द्वारा उर्मिला तिवारी स्मृति 'सप्तपर्णी सम्मान' से पुरस्कृत
इन्टरनेशनल ध्रुवपद-धाम ट्रस्ट, जयपुर (राज.) द्वारा 'लाइफ टाइम अचीवमेंट' सम्मान

pnb
MERCHANT: KALA SAMAY
SCAN & PAY

कला समय: सहयोग राशि भुगतान हेतु क्यूआर कोड का उपयोग करे।

कलासमय

कला समय

कला, संस्कृति, साहित्य एवं समसामयिक द्वैमासिक पत्रिका

❄ **पत्रिका नहीं, एक रचनात्मक अनुष्ठान** ❄

संरक्षक
विजयदत्त श्रीधर
(पद्म श्री सम्मान से विभूषित)
डॉ. कपिल तिवारी
(पद्म श्री सम्मान से विभूषित)
डॉ. श्यामसुंदर दुबे
कैलाशचन्द्र घनश्याम पाण्डेय
महेश श्रीवास्तव
❄
लोगो
हरचंदन सिंह भट्टी
(पद्म श्री सम्मान से विभूषित)
❄
कानूनी सलाहकार
उमेश कुमार गुप्ता
(प्रिंसिपल जिला न्यायाधीश रिटा.)
❄
परामर्श
लक्ष्मीनारायण पयोधि
डॉ. नारायण व्यास
प्रो. सज्जनलाल ब्रह्मभट्ट 'रसरंग'
प्रो. सुधा अग्रवाल
❄
सांस्कृतिक प्रतिनिधि
चेतना श्रीवास
❄
वेबसाइट प्रबंधन
मयंक अग्रवाल

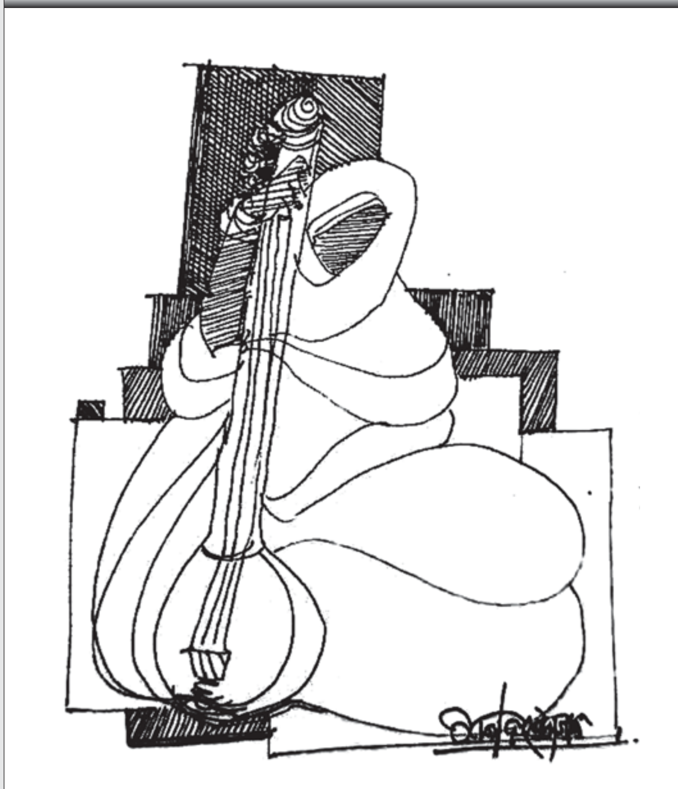

रेखाचित्र: मनोहर काजल

संपादक
भँवरलाल श्रीवास
❄
सलाहकार संपादक
डॉ. मुकेश कुमार मिश्रा
❄
सह संपादक
डॉ. मधु भट्ट तैलंग
देवेन्द्र प्रकाश तिवारी
❄
उप संपादक
राहुल श्रीवास
सुन्दरलाल प्रजापति
❄
नरिन्दर कौर
प्रबंध संपादक
❄
संपादक मंडल
डॉ. बिनय षडंगी राजाराम
साहित्य
❄
अरुण तिवारी
समसामयिक
❄
हरीश श्रीवास
कला, संस्कृति

सदस्यता सहयोग राशि:

(रजिस्टर्ड डाक शुल्क 300/- प्रति वर्ष अतिरिक्त) साधारण डाक

वार्षिक	:	600 (व्यक्तिगत)	700 (संस्थागत)	साधारण डाक
द्वैवार्षिक	:	1200 (व्यक्तिगत)	1400 (संस्थागत)	साधारण डाक
चार वर्ष	:	2300 (व्यक्तिगत)	2700 (संस्थागत)	साधारण डाक
आजीवन	:	10,000 (व्यक्तिगत)	12000 (संस्थागत)	साधारण डाक

(10 वर्ष के लिए)

(कृपया सदस्यता शुल्क- ऑनलाईन/ड्राफ्ट/मनीआर्डर द्वारा 'कला समय' के नाम पर उक्त पते पर भेजें)

विशेष : 'कला समय' की प्रतियाँ साधारण डाक से भेजी जाती हैं यदि कोई महानुभाव रजिस्टर्ड पोस्ट से पत्रिका मंगवाना चाहते हैं तो कृपया वार्षिक डाक खर्च 300/- अतिरिक्त भेजने का कष्ट करें।

कार्यालय सम्पर्क :

संपादकीय एवं सदस्यता सहयोग

जे-191, मंगल भवन, ई-6, महावीर नगर,
अरेरा कॉलोनी, भोपाल (म.प्र.)-462016
फोन : 0755-2562294, मो.- 94256 78058
ई-मेल : kalasamaymagazine@gmail.com
bhanwarlalshrivas@gmail.com
वेबसाइट : **www.kalasamaymagazine.com**

ऑनलाइन सदस्यता सहयोग सुविधा :

'कला समय' का बैंक खाता विवरण

पंजाब नैशनल बैंक की शाखा अरेरा कॉलोनी भोपाल, म.प्र. **(IFSC : PUNB0093210)** के नाम देय, खाता संख्या **A/No. 09321011000775** में ऑनलाइन राशि जमा कराने के बाद रसीद की फोटोकॉपी अपने पूर्ण पते के साथ हमें भेज दें।

कला समय पत्रिका में व्यक्त विचार लेखकों, अतिथि संपादकों के अपने हैं, यह जरूरी नहीं कि संपादक, प्रकाशक, मुद्रक उनसे सहमत हो। पत्रिका से संबंधित समस्त विवाद, भोपाल न्यायालय के अधीन ही रहेंगे। सम्पादन, संचालन, प्रबंधन एवं प्रकाशन- अवैतनिक, अव्यवसायिक

विशेष नोट : © सर्वाधिकार सुरक्षित 'कला समय' प्रबंधन यह स्पष्ट करना आवश्यक समझता है कि 'कला समय' में प्रवेशांक फरवरी-मार्च 1998 से लेकर अब तक प्रकाशित होने वाली समस्त सामग्री या सामग्री के अंश के पुनर्प्रकाशन तथा पुनरुत्पादन के सर्वाधिकार कॉपीराइट अधिनियम के अंतर्गत 'कला समय' के पास सुरक्षित हैं। अत: कोई भी व्यक्ति या संस्था 'कला समय' की इस सामग्री या इस सामग्री के अंश का उपयोग प्रबंधन की पूर्वानुमति के बिना न करें।

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक एवं स्वत्वाधिकारी भँवरलाल श्रीवास द्वारा गणेश ग्राफिक्स, 26 बी, देशबन्धु भवन, प्रेस कॉम्पलेक्स, जोन-1, एम.पी. नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं जे-191, मंगल भवन, ई-6, महावीर नगर, अरेरा कालोनी, भोपाल (म.प्र.)- 462016 से प्रकाशित। संपादक - **भँवरलाल श्रीवास**

हिन्दुस्तानी शास्त्रीय, गायक, गायकी और घराने पर केन्द्रित विशेषांक के प्रमुख विद्वान हस्ताक्षर...

डॉ. कपिल तिवारी
(पद्म श्री सम्मान से विभूषित)

उल्हास तेलंग

पंडित किरण देशपाण्डे

प्रो. सुनीरा कासलीवाल व्यास

प्रो. डॉ. मधु भट्ट तैलंग

डॉ. वीणा सिन्हा

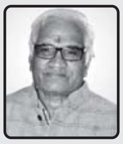
बी. एल. आच्छा

आचार्य जागृति

डॉ. रमा दास

रीना सोपम

डॉ. पूरन सहगल

चेतन औदिच्य

डॉ. देवेन्द्र वर्मा 'ब्रजरंग'

चन्द्र मोहन

नागनाथ मानकेश्वर

डॉ. शुप्रीत सिंह

प्रो. सुधा अग्रवाल

डॉ. दुष्यंत त्रिपाठी

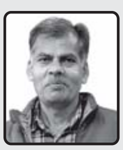
मधुर कुलश्रेष्ठ

'अशोक नादां'

सत्य नाराणय शर्मा

इस प्रतिष्ठा विशेषांक के अतिथि संपादक

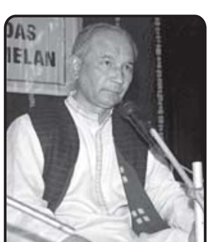

प्रो. पं. सज्जनलाल ब्रह्मभट्ट 'रसरंग'
मध्यप्रदेश शासन का शिखर सम्मान प्राप्त
(गायनाचार्य ग्वालियर घराना)
मो. 9425673106

इस बार

- **अतिथि संपादक की कलम से...**
  घराना एक परिचय 5
- **संपादकीय**
  संगीत विद्या अध्यात्म विद्या है गुरु कृपा और गुरु सान्निध्य के बिना ... 6
- **आलेख**
  घर, घराना और घरानेदार गायकी / उल्हास तेलंग 9
  संगीत और संगत / पंडित किरण देशपाण्डे 13
  घराना - पद्धत्ति की जनक स्वामी हरिदास द्वारा .../ प्रो. डॉ. मधु भट्ट तैलंग 16
  ग्वालियर घराने की पलुस्कर परंपरा के .../ प्रो. सुनीरा कासलीवाल व्यास 19
  पंडित भीमसेन जोशी होने का अर्थ: एक .../ आचार्य जागृति 22
  हिन्दुस्तानी शास्त्रीय गायकी की यशवंती कीर्तिध्वजा/ डॉ. पूरन सहगल 25
  पटियाला घराने की ख़्याल गायकी में उस्ताद बाकर.../ डॉ. शुप्रीत सिंह 28
  पंडित गंगा प्रसाद पाठक / प्रो. सज्जन लाल ब्रह्मभट्ट 'रसरंग' 30
  ख्याल गायन का ग्वालियर घराना : एक .../डॉ. दुष्यंत त्रिपाठी 32
  श्रुतियाँ और भी हैं जो पहचानी नहीं गई / सत्य नाराणय शर्मा 37
  दरभंगा अमता- घराना के ध्रुपद गायक, पंडित रामचतुर.../ डॉ. रमा दास 40
  प्रो. सी. एल. दास की 92वीं जयंती (जनवरी 4)/ रीना सोपम 43
- **कला चिंतन**
  भारतीय शास्त्रीय संगीत की आत्मा 'घराना': लुप्त होती .../ चन्द्र मोहन 46
  कोयला और पेंसिल से बनाए महान संगीतज्ञों.../ नागनाथ मानकेश्वर 49
- **कला -अक्ष**
  संजय कुरहे : कला में नूतन व्यंजना का कलाकार/ चेतन औदिच्य 53
- **संगीत-चिंतन**
  गायक, गायकी और घराने / डॉ.देवेन्द्र वर्मा 'ब्रजरंग' 54
- **संस्मरण**
  महान कलाकारों की उदारता के कुछ संस्मरण/ प्रो. सुधा अग्रवाल 62
- **साक्षात्कार**
  विदुषी डॉ. मल्लिका बैनर्जी से चन्द्र मोहन की बातचीत.... 64
  वरिष्ठ संगीतज्ञ उस्ताद सिराज खान से नागनाथ मनकेश्वर की बातचीत 68
- **अद्वैत-विमर्श**
  वैज्ञानिक दृष्टिकोण से अद्वैत / डॉ. वीणा सिन्हा 71
- **पुनर्पाठ-संस्कृति**
  नववर्ष, समय पर 'विमर्श' / डॉ. कपिल तिवारी 74
- **व्यक्तित्व**
  जड़ों को पहचानती तरु-शिखाः राकेश शर्मा/ बी. एल. आच्छा 75
- **कविता**
  एक गीतिमय याद पं. गंगा प्रसाद पाठक/ 'अशोक शर्मा नादां' 81
- **पुस्तक : समीक्षा**
  विधवा, परित्यक्त नारियों के सशक्तीकरण की... / मधुर कुलश्रेष्ठ 82
- **यात्रा: वृत्तांत**
  'बीकानेर एक जीती-जागती परंपरा का नाम है' 85
- **मध्यप्रदेश की विकास यात्रा ...**
  डॉ. मोहन यादव अभ्युदय मध्यप्रदेश विकास और सेवा के 2 वर्ष 88
  निवेश, पीएमश्री पर्यटन और हेलीकॉप्टर सेवा से नई ऊंचाइयों... 93
- **समवेत** 98-102

शब्द संयोजन एवं आकल्पन - गणेश ग्राफिक्स, भोपाल, 9981984888
मुख्य आवरण, आवरण दो - चन्द्र मोहन
छायाचित्र -मनीष सराठे, सुनील सेन, गूगल से साभार
सहयोग- धन सिंह, लता श्रीवास | **रेखाचित्र :** मनोहर काजल
आवरण सज्जा - मनोज माकोड़े, गणेश ग्राफिक्स

अतिथि संपादक की कलम से...

सुप्रसिद्ध ध्रुवपद गायिका विदुषी प्रो. डॉ. मधु भट्ट तैलंग के साथ
अतिथि संपादक प्रो. पं. सज्जनलाल ब्रह्मभट्ट 'रसरंग'

घराना एक परिचय

'कला समय' पत्रिका का प्रत्येक विशेषांक पठनीय एवं संग्रहणीय है। साथ ही साथ संगीत/साहित्य की परम्परा एवं नवाचार के प्रत्येक पक्ष को समय-समय पर अपनी पत्रिका में विशेष रूप से महत्व देती है। प्रस्तुत विशेषांक में संगीत के घरानों पर विविध सामग्री तथ्यों के साथ प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। इस संदर्भ में संगीत के गुणीजनों का भरपूर सहयोग मिला है जो पत्रिका में संग्रहित है।

संगीत जगत के घरानो का विशेष महत्व है। घरानों के संदर्भ में यदि इतिहास पर दृष्टि डालें तो यह प्रतीत होता है कि घराने परम्परा के ही प्रतिरूप है। संगीत जगत में 15वीं शताब्दी से यह परम्परा विभिन्न नामों से प्रचार में है। सर्वप्रथम ध्रुपद ही वर्तमान संगीत परम्परा का आधार है। ध्रुपद की विभिन्न वाणियाँ प्रचार में थीं। इन सभी का प्रायोगिक पक्ष (गाने की क्रिया) ही इन्हें एक दूसरे से अलग करती थी। ध्रुपद में चार वाणियाँ थी। ये सभी अपने क्रियात्यक पक्ष द्वारा ही एक दूसरे से भिन्न हो जाती थी। यही क्रिया घरानों में भी देखी जाती है रागों के संदर्भ में शास्त्रीय दृष्टि से कोई परिवर्तन नहीं है। अर्थात शास्त्र दृष्टि से रागों के जो भी नियम है उन्हें बदस्तूर अपनाया जाता है। उन्ही के अनुसार रागों को गया/बजाया जाता है। परन्तु व्यक्ति का प्रस्तुतीकरण भिन्न हो जाता है। आरंभ में राग के आधारभूत नियमों का कड़ाई से पालन कराया जाता है जिससे राग रूप दिल-दिमाग में भलीभांति स्थापित हो जाए। इसके बाद गुरुजी के सामने (सीना-ब-सीना) संगीत-शिक्षा लेने से उस राग की विशेषताएं दिखने लगती है एवं समझ में भी आने लगती है समझ में आना और दिखना यह तो समझ की बात हुई। परन्तु उन्हें स्वयं गाकर दिखाना यह तभी संभव है तब आपका रियाज़ रागों को आत्मसात कर लेगा। अर्थात रागों को आत्मसात रियाज़ से ही संभव है। गुरु से शिक्षा के बाद अभ्यास (रियाज़) ही वह क्रिया है जो आपके गायन और दिमाग को परिपक्व बनाते है। अभ्यास से आपका गला तैयार होता है और शिक्षा से आपका दिमाग परिपक्व होता है। अर्थात दिमाग में आई कल्पना की प्रायोगिक रूप में गले से उसकी अदायगी करना। यह दर्शाता है कि आपकी शिक्षा अभ्यास (रियाज़) की दिशा सही है। अर्थात दिमाग में आई कल्पना को जैसा का तैसा गाकर या बजाकर प्रस्तुत करना पूर्णता दर्शाती है। इस कड़ी में यह भी जुड़ा हुआ है कि आपके गायन की क्रिया एक समान है या उसमें परिर्वतन हो रहा है। यदि यह क्रिया एक समान है तो यह किसी घराने से संबंधित हो जाती है। अन्यथा उसे अनुकरण ही कहा जाएगा। यद्यपि संगीत में अनुकरण स्वत: सन्निहित है, परन्तु उसकी समय सीमा भी है। उसके बाद अनुकरण को मान्यता नहीं है। संगीत में स्वयं की विशेषता या अपना तरीका (style) गुरु की शिक्षा एवं स्वयं के अभ्यास से ही संभव है। वह भी नियमित एवं बदस्तूर अभ्यास के द्वारा ही संभव है। अर्थात ख्याति या कल्पना यह कहने भर के लिए है। वास्तव में यह ख़्याल या कल्पना नहीं है ठोस धरातल ही है, उसी आधार पर कल्पना को मूर्त रूप देना है। इसी मूर्तरूप की विभिन्न घरानों के माध्यम से समझा जाता है। इन घरानों को यद्यपि स्थान विशेष नामों से जाना जाता है। इससे यह सिद्ध होता है कि स्थान विशेष स्थाई है जबकि व्यक्ति विशेष (कलाकार) नश्वर हैं। इसके साथ ही व्यक्ति विशेष को संरक्षण या स्थायित्व स्थान विशेष ही करता है। इसी कारण घरानों में व्यक्ति विशेष का नाम बाद में आता है। जैसे ग्वालियर घराना, आगरा घराना, जयपुर घराना आदि अर्थात स्थान विशेष इन्हें संरक्षण देता है तभी ये अपनी कला को सुरक्षित रख पाते हैं और बदले में घराने विभिन्न स्थानों के नाम से जाने जाते है। इनके संरक्षण एवं पालन पोषण में तत्कालीन रियासतों का भी विशेष महत्व है जिसे भुलाया नहीं जा सकता।

'कला समय' के संपादक श्री भँवरलाल श्रीवास ने इस महत्वपूर्ण विशेषांक का दायित्व मुझे सौपा है उसके लिए मैं उनका और पूरे संपादक मंडल का हृदय से आभारी हूँ।

प्रो. पं. सज्जन लाल ब्रह्मभट्ट 'रसरंग'

" गुरु से शिक्षा के बाद अभ्यास (रियाज़) ही वह क्रिया है जो आपके गायन और दिमाग को परिपक्व बनाते है। अभ्यास से आपका गला तैयार होता है और शिक्षा से आपका दिमाग परिपक्व होता है। अर्थात दिमाग में आई कल्पना की प्रायोगिक रूप में गले से उसकी अदायगी करना। यह दर्शाता है कि आपकी शिक्षा अभ्यास (रियाज़) की दिशा सही है। अर्थात दिमाग में आई कल्पना को जैसा का तैसा गाकर या बजाकर प्रस्तुत करना पूर्णता दर्शाती है। "

'संगीत विद्या अध्यात्म विद्या है'
गुरु कृपा और गुरु सान्निध्य के बिना संभव नहीं

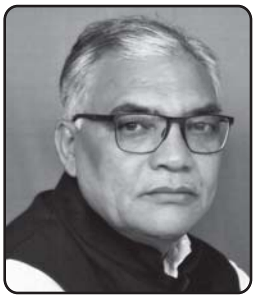

'तेरी वीणा के सुर से ही तानसेन की तान जगी,
तेरे ज्ञान की ज्योति से ही वाल्मीकि को लगन लगी।
तेरी ताल पे मेरा सुर हो अधरों को ऐसा स्वर दें,
हे ज्ञान दायिनी मात मेरी, अंतर को तू निर्मल कर दे।।'

- यशवंत चौहान

हिन्दुस्तानी संगीत का कंठाहार स्वर ताल एवं साहित्य की अदभुत त्रिवेणी है। वह राजा मानसिंह तोमर, बैजू बावरा, स्वामी हरिदास और तानसेन की बहुमूल्य थाती है। ध्रुवपद हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत की सबसे प्राचीनतम शैली है। ध्रुवपद संगीत कोई मनोरंजन का संगीत नहीं, बल्कि भक्ति संगीत है। ध्रुवपद संगीत सुनने वालों को यह सोचने पर मजबूर करता है। भारतीय शास्त्रीय संगीत विद्वानों के अनुसार ध्रुवपद पहले मंदिरों में गाया जाता था और गायक अपना गायन ईश्वर को समर्पित करता था। हमारे यहाँ संगीत को केवल लौकिक सुख का साधन ही नहीं अपितु मुक्ति मार्ग का अलंबन तक स्वीकार किया गया है। शास्त्रीय संगीत का अपना शास्त्र है, अपने नियम – उपनियम हैं और शास्त्र के नियमों में बँधा होने के कारण शास्त्रीय – संगीत स्वतन्त्रता पूर्वक विचरने का अधिकारी नहीं है। शास्त्रीय संगीत के प्रयोग एवं परीक्षण के लिए शास्त्र ज्ञान एवं विशिष्ट अभ्यास की आवश्यकता है यद्यपि शास्त्रीय संगीत वैयक्तिक साधना का प्रतीक है तथा इसका शास्त्रीय पक्ष व्यक्तिनिष्ट होते हुए भी इसके माध्यम से सौन्दर्य रंजन एवं रसानुभूति प्राप्त होती है। शास्त्रीय संगीत भारत को ईश्वरीय देन है। शास्त्रीय संगीत में किसी विशेष राग में प्रस्तुतिकरण हेतु उसमें लगने वाले वादी, सम्वादी, स्वर, लय, ताल तथा समय सम्बन्धी शास्त्रीय नियमों का पालन अनिवार्य है। यद्यपि गृह, अंश, स्वर से आलाप प्रारम्भ करके अमुक स्वर पर समाप्त करना जैसे जटिल नियम हैं। भारतीय संगीत में शास्त्रीय संगीत की मुख्य दो पद्धतियाँ प्रचलित हैं जिन्हें क्रमश: उत्तरी संगीत पद्धति व दक्षिणी संगीत पद्धति कहा जाता है।

'शिशु के शस्य-शाख ने दिया मनु अभिचेतन,
किया है सृष्टि और रचा हृदय में स्नेह निकेतन।
पला बढ़ा और हुआ युग-युग की गोद में युवा,
संगीत की दशा का हर कलाकार है गवाह।।

अर्थात – संगीत को समय ने विभिन्न आयामों से सजा-धजाकर व्यस्क तो बना दिया, किन्तु हमारा शास्त्रीय संगीत आज भी शिशु की तरह सम्पूर्ण विद्याओं को लिए प्रगति के पथ पर चलता चला जा रहा है। कला जीवन की सबसे बड़ी तपस्या है। महात्मा गाँधी जी ने जब उस्ताद अब्दुल करीम खाँ साहब का गायन सुना तो वे इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने कहा कि मेरा वश चले तो मैं उस्ताद को हर गाँव में ले जाकर सुनवाँऊ ताकि लोग जान सके की हमारे यहाँ का संगीत कितना श्रेष्ठ है। हमारे यहाँ धरानों की तालीम का सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा था, कड़ा अनुशासन। गुरु की किसी भी आज्ञा का पालन शिष्य के लिए अनिवार्य होता था शायद इसी कड़े अनुशासन के कारण विभिन्न घरानों ने अपनी अलग

वरिष्ठ शास्त्रीय गायक पं. जसराज एवं संपादक भँवरलाल श्रीवास

❛ हम सब जानते ही हैं कि गायन कला मनुष्य के आरम्भिक दिनों से ही उसके सुख – दुख में लगातार साथ रही है और अपनी जीवन – शक्ति से मनुष्यता को अमर करती रही है। मनुष्यता पर जब – जब जड़ या ठस प्रवृत्तियाँ हावी होने की कोशिश की है तब – तब कष्ठ से उठी स्वर लहरियों ने उसे सुमधुर और सुकोमल रखने का अचूक यटन किया है और गायन उत्री करूणा की उजास ने सृष्टि के हर हृदय को अंजोर पूरित किया है। गायन कला की महिमा और प्रताप वेदों से चलकर आज तक जनमानस में जीवन्त है।❜